नवग्रह दोष और उपाय

नवग्रह

- ग्रह (संस्कृत के ग्रह से - पकड़ना, कब्जे में करना माता भूमिदेवी (पृथ्वी) के प्राणियों पर एक ब्रह्मांडीय प्रभावकारी है। हिन्दू ज्योतिष में नवग्रह (संस्कृत: नवग्रह, नौ ग्रह या नौ प्रभावकारी) इन प्रमुख प्रभावकारियों में से हैं।
- राशि चक्र में स्थिर सितारों की पृष्ठभूमि के संबंध में सभी नवग्रह की सापेक्ष गतिविधि होती है। इसमें ग्रह भी शामिल हैं: मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि, सूर्य, चंद्रमा, और साथ ही साथ आकाश में अवस्थितियां, राहू (उत्तर या आरोही चंद्र आसंधि) और केतु (दक्षिण या अवरोही चंद्र आसंधि)।
- कुछ लोगों के अनुसार, ग्रह प्रभावों के चिह्नक हैं जो प्राणियों के व्यवहार पर लौकिक प्रभाव को इंगित करते हैं। वे खुद प्रेरणा तत्व नहीं हैं। लेकिन उनकी तुलना यातायात सिग्नल से की जा सकती है।
- ज्योतिष ग्रंथ प्रश्न मार्ग के अनुसार, कई अन्य आध्यात्मिक सत्ता हैं जिन्हें ग्रह या आत्मा कहा जाता है। कहा जाता है कि सभी (नवग्रह को छोड़कर) भगवान शिव या रुद्र के क्रोध से उत्पन्न हुए हैं। अधिकांश ग्रह की प्रकृति आम तौर पर हानिकर है, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो शुभ हैं।ग्रह पिंड शीर्षक के तहत, पुस्तक द पुराणिक इनसाइक्लोपीडिया, ऐसे ग्रहों की (आध्यात्मिक सत्ता की आत्माएं) एक सूची प्रदान करती है, जो माना जाता है कि बच्चों को सताते हैं, आदि। इसी किताब में विभिन्न जगहों पर ग्रहों का नाम दिया गया है, जैसे स्खंड ग्रह जो माना जाता है कि गर्भपात का कारण होता है।
- ज्योतिष के अनुसार व्यक्ति के शरीर का संचालन भी ग्रहों के अनुसार होता है। सूर्य आंखों, चंद्रमा मन, मंगल रक्त संचार, बुध हृदय, बृहस्पति बुद्धि, शुक्र प्रत्येक रस तथा शनि, राहू और केतु उदर का स्वामी है।

ये हैं नौ ग्रह

सूर्य- प्रथम ग्रह हैं सूर्य जिन्हें ग्रहों का मुखिया माना जाता है। मलमास में प्रात काल सूर्य को जल चढ़ा कर आदित्य मंत्र आदित्यहृदयम का जाप करने से पुण्य प्राप्त होता है।

चंद्र- चन्द्र एक देवता हैं, इनको सोम के रूप में भी जाना जाता है और उन्हें वैदिक चंद्र देवता सोम के साथ पहचाना जाता है। उन्हें जवान, सुंदर, गौर, द्विबाहु के रूप में वर्णित किया जाता है।

मंगल- लाल ग्रह या मंगल को भी देवता मानते हैं। मंगल ग्रह को संस्कृत में अंगारक भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है जो लाल रंग का हो। इन्हें भौम यानि 'भूमि का पुत्र' भी कहते हैं। ये युद्ध के देवता हैं और ब्रह्मचारी हैं। इन्हें पृथ्वी, की संतान माना जाता है और ये वृश्चिक और मेष राशि के स्वामी हैं।

बुध- बुध, चन्द्रमा और बृहस्पति की पत्नी तारा के पुत्र हैं। चंद्रमा के तारा को बलात संबंध बना कर गर्भवती करने से उत्पन्न बुध रजो गुण वाले हैं। उन्हें शांत, सुवक्ता और हरे रंग में प्रस्तुत किया जाता है। उनके हाथों में एक कृपाण, एक मुगदर और एक ढाल होती है।

बृहस्पति- बृहस्पति, देवताओं के गुरु हैं, शील और धर्म के अवतार हैं, प्रार्थनाओं और बलिदानों के मुख्य प्रस्तावक हैं, जिन्हें देवताओं के पुरोहित के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। वे पीले या सुनहरे रंग के हैं और एक छड़ी, एक कमल और अपनी माला धारण करते हैं।

शुक्र- शुक्र भृगु और उशान के बेटे का नाम है और वे दैत्यों के शिक्षक और असुरों के गुरु हैं। प्रकृति से वे राजसी हैं और धन, खुशी और प्रजनन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शनि- शनि हिन्दू ज्योतिष में नौ मुख्य खगोलीय ग्रहों में से एक है। इसकी प्रकृति तमस है और कठिन मार्गीय शिक्षण, करियर और दीर्घायु को दर्शाता है। सूर्य और छाया के पुत्र हैं। कहा जाता है कि जब उन्होंने शिशु के रूप में पहली बार

अपनी आंखें खोली, तो सूरज ग्रहण में चला गया, जिससे ज्योतिष चार्ट यानि कुंडली पर शनि के प्रभाव का साफ़ संकेत मिलता है। उन्हें काले रंग में, काला लिबास पहने, एक तलवार, तीर और दो खंजर लिए हुए, एक काले कौए पर सवार दिखाया जाता है।

राहु- ये आरोही, उत्तर चंद्र आसंधि के देवता हैं। ये राक्षसी सांप का मुखिया है जो हिन्दू शास्त्रों के अनुसार सूर्य या चंद्रमा को निगलते हुए ग्रहण को उत्पन्न करता है। इसका कोई सर नहीं है और ये आठ काले घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार तमस असुर है।

केतु- केतु अवरोही, दक्षिण चंद्र आसंधि का देवता है। केतु को आम तौर पर एक छाया ग्रह के रूप में जाना जाता है। उसे राक्षस सांप की पूंछ के रूप में देखा जाता है। माना जाता है कि मानव जीवन पर इसका एक जबरदस्त प्रभाव पड़ता है और पूरी सृष्टि पर भी। कुछ विशेष परिस्थितियों में यह किसी को भी प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचने में मदद करता है, और प्रकृति में तमस है।

सूर्य

सूर्य ग्रह से ही हमें ऊर्जा व प्रकाश प्राप्त होता है। यह हमारे जीवन को प्रकाशमय करते हैं। हिंदू धर्म को मानने वालों के लिए सूर्य देव समान हैं। हिंदू धर्म में इनकी उपासना की जाती है। परंतु इसका एक और पहलू है वैदिक ज्योतिष में सूर्य एक ग्रह के रूप में हैं और ग्रहों में ये श्रेष्ठ माने जाते हैं। इस लेख में हम सूर्य ग्रह के बारे में विस्तार से जानेंगे। हम जानेंगे कि सूर्य का वैदिक ज्योतिष में क्या महत्व है? इसके साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सूर्य को क्यों महत्व दिया जाता है? सूर्य की पौराणिक मान्यता क्या है? सूर्य मंत्र, रत्न, रंग क्या है? इस लेख में हम इन्हीं बिंदुओं पर बात करेंगे।

सूर्य ग्रह

सूर्य ग्रह को यदि खगोलीय दृष्टि से देखा जाए तो यह सौर मंडल में केंद्र में स्थित है। जिसके चलते यह पृथ्वी से काफी करीब है। सूर्य के कारण ही पृथ्वी पर जीवन सूचारू रूप से कालांतर से चला आ रहा है। खगोल विज्ञान की में शुक्र व बुध के बाद सबसे कम है। इसलिए यह पृथ्वी को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। वैदिक ज्योतिष में भी सूर्य को काफी महत्व दिया जाता है। सूर्य को क्रूर ग्रह माना जाता है। ये प्रभावी होते हैं तो जातक का समय बदल जाता है।

ज्योतिष में सूर्य ग्रह का महत्व

ज्योतिष में सूर्य को आत्मा का कारक माना जाता है। इसके साथ ही ज्योतिष में सूर्य को पिता का प्रतिनिधित्व भी माना जाता है। सूर्य के कारण ही पिता से संतान का संबंध मधुर व कटु बनता है। जब भी किसी जातक की कुंडली का आकलन किया जाता है तो सबसे पहले सूर्य का स्थान देखा जाता है। क्योंकि ज्योतिष में सूर्य को सफलता व सम्मान का कारक कहा जाता है।

सूर्य प्रभावी हो तो जातक अपने जीवन में यश प्राप्त करता है। इसके साथ ही वह ओजस्वी व प्रतापी होता है। महिला की कुंडली में सूर्य को पति के सफलता के लिए देखा जाता है। ज्योतिष में सूर्य के नाम से भी राशियों को संबोधित किया जाता है। जिसे सूर्य राशि कहा जाता है। यदि जातक की कुंडली में सूर्य की महादशा चल रही हो तो रविवार के दिन जातक को अच्छे फल मिलते हैं। ज्योतिष में सूर्य सिंह राशि का स्वामी माना गया है और मेष राशि में यह उच्च होता है, जबकि तुला राशि सूर्य की नीच राशि मानी जाती है।

सूर्य का मानव जीवन पर प्रभाव

- सूर्य हमारे ऊर्जा का स्त्रोत है। इन्हीं के कारण हम ऊर्जा वान रहते हैं। प्रकृति का सुचारु रूप से चलना भी सूर्य के ही ज़िम्मे है। इसी प्रकृति का हिस्सा हम भी हैं। जिसके चलते इनका प्रभाव हम पर पड़ता है। ज्योतिष

के अनुसार जिस जातक की कुंडली में सूर्य लग्न में विराजमान होते हैं उसका चेहरा बड़ा और गोल तथा आँखों का रंग शहद के समान होता है। जातक के शरीर में सूर्य हृदय को दर्शाता है। काल पुरुष कुंडली में अंतर्गत सिंह राशि हृदय को इंगित करती है। शारीरिक संरचना व ज्योतिष के अनुसार सूर्य पुरुषों की दायीं आँख व स्त्रियों की बायीं आँख को दर्शाता है।

- ज्योतिष के मुताबिक यदि किसी जातक की कुंडली में सूर्य बली है तो जातक अपने जीवन में सभी लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। जातक के अंदर गजब का साहस देखने को मिलता है। इसके साथी वह प्रतिभावान व नेतृत्व क्षमता से परिपूर्ण होता है। जीवन में उसे मान सम्मान की कमी नहीं होती। जातक ऊर्जावान, आत्म-विश्वासी व आशावादी होगा। जातक उपस्थिति के कारण घर में ख़ुशी, आनंद का माहौल बना रहा है। जातक दयालु होता है। रहन सहन शाही हो जाती है। ऐसे जातक अपने कार्य व संबंधों के प्रति काफी वफ़ादार होते हैं। कुंडली में सूर्य का उच्च व प्रभावी होना सरकारी नौकरी की ओर इशारा करता है। जातक जीवन में उच्च पद प्राप्त करता है।
- जिस जातक की कुंडली में सूर्य पीड़ित होते हैं या प्रभावी नहीं होते हैं उन जातकों पर इसका गहरा असर पड़ता है। ऐसे में जातक अहंकारी हो जाता है। क्रोध जातक की नाक पर सवार रहती है। जिसके कारण उसके कई काम बिगड़ जाते हैं। जातक छोटी –छोटी बातों को लेकर उदास हो जाते हैं। इसके साथ ही वे किसी पर भी विश्वास नहीं कर पाते हैं। जातकों के अंदर ईर्ष्या व्याप्त हो जाता है। जातक महत्वाकांक्षी होने के साथ आत्म केंद्रित भी बन जाते हैं। जिसके कारण इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी कमी आती है।

सूर्य की पौराणिक मान्यता

सूर्य को सौर मंडली का राजा माना जाता है। इसके साथ ही हिंदू पौराणिक कथाओं में सूर्य को देव कहा गया है। सूर्य की आराधना की जाती है। मान्यता के अनुसार सूर्य महर्षि कश्यप के पुत्र हैं और इनकी माता अदिति हैं। जिसके कारण सूर्य का एक नाम आदित्य भी है। जैसा की आपने देखा होगा। आपके घर में या आस पड़ोस में कोई लोग सूर्य को नित्य दिन जल अर्पित व सूर्य नमस्कार करते हैं। क्योंकि जातक इसके चिकित्सीय और आध्यात्मिक लाभ को पाने के लिए ऐसा करते हैं। हिन्दू पंचांग के अनुसार रविवार का दिन सूर्य के लिए समर्पित है जो कि सप्ताह का एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

यंत्र – सूर्य यंत्र
मंत्र - ओम भास्कराय नमः
रत्न - माणिक्य
रंग - पीला/ केसरिया
जड़ - बेल मूल
उपाय – यदि जातक की कुंडली में सूर्य कमजोर या पीड़ित हैं तो जातकों को हृदय आदित्य स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। इसके साथ ही सूर्य उपासना करना जातक के लिए शुभफलदायी होगा।

सूर्य संबंधित कुछ अन्य विचार

सूर्य के मित्र ग्रह चन्द्रमा, मंगल,गुरु है। शनि व शुक्र सूर्य के शत्रु ग्रह है। बुध ग्रह सूर्य के साथ सम सम्बन्ध रखता है। सूर्य की मूलत्रिकोण राशि सिंह है। इस राशि में सूर्य 0 अंश से 20 अंश पर होने पर सूर्य मूलत्रिकोण अंशों पर होता है। सूर्य की उच्च राशि मेष राशि है। मेष राशि में सूर्य 10 अंश पर उच्च स्थान प्राप्त करते है। सूर्य तुला राशि में 10 अंश पर नीच राशिस्थ होते है।

सूर्य पुरुष प्रधान ग्रह है। सूर्य पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करते है। सूर्य का रत्न रुबी, रक्तमणी और तामडा है। सूर्य का शुभ रंग नारंगी, केसरी, हल्का लाल रंग है। सूर्य की शुभ संख्या 1, 10, 19 है। सूर्य के लिए शिव, अग्नि, रुद्र, भगवान नारायण, सचिदानन्द। सूर्य की कारक वस्तुओं में आत्मा, स्वाभिमान, तेजस्विता, ताकत, चिकित्सा करने का सामर्थ्य।

सूर्य राजनीति, राजसी, राजसिक ग्रह, एक नैसर्गिक आत्मकारक, जीवन का स्त्रोत, ह्रदय, ऊर्जा और चतुष्पद राशि स्वामी ग्रह है।

सूर्य का बीज मंत्र

ऊँ ह्रं ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:

सूर्य का वैदिक मंत्र

ऊँ आसत्येनरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंच ।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी यति भुवना विपश्यत ।।

सूर्य के लिए गेहूं, तांबा, रुबी, लाल वस्त्र, लाल फूल, चन्दन की लकडी, केसर आदि दान किये जा सकते है।
सूर्य की राशि लग्न में हो, या सूर्य लग्न बली होकर लग्न भाव में अथवा व्यक्ति की जन्म राशि सूर्य की राशि हो, तो व्यक्ति की आंखे, शहद के रंग की आंखें, शीघ्र ही क्रोधित होने वाला, कमजोर दृष्टि वाला, कद में औसत होता है।

सूर्य शरीर में पित्त, वायु, हड्डियां, घुटने और नाभी का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य के कारण व्यक्ति को ह्रदय रोग, हड्डियों का टूटना, माइग्रेन, पीलिया, ज्वर, जलन, कटना, घाव, शरीर में सूजन, विषाक्त, चर्म रोग, कोढ, पित्तीय संरचना, कमजोर दृष्टि, पेट, दिमागी, गडबडी, भूख की कमी जैसे रोग प्रभावित कर सकते हैं।

सूर्य के बारे में रोचक जानकारी:

- सूर्य सभी ग्रहों का मुखिया है।
- वैदिक काल से ही भारत में सूर्योपासना का प्रचलन रहा है
- सूर्य के बाल और हाथ सोने के हैं।
- सूर्यदेव के रथ को 7 घोड़े खींचते हैं, जो 7 चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- सौर देवता, आदित्यों में से एक, कश्यप और उनकी पत्नियों में से एक अदिति के पुत्र।
- पौराणिक कथाओं के अनुसार, सूर्य की अधिक प्रसिद्ध संततियों में हैं शनि (सैटर्न), यम (मृत्यु के देवता) और कर्ण (महाभारत वाले) है।
- सूर्य 'रवि' के रूप में 'रविवार' या 'इतवार' के स्वामी हैं।
- वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है।
- सूर्य से ही इस पृथ्वी पर जीवन है।
- ज्योतिष शास्त्र में नव ग्रहों में सूर्य को राजा का पद प्राप्त है।
- सूर्य देव की प्रसन्नता के लिए इन्हें नित्य अर्घ्य देना चाहिए।
- मंत्र 'ॐ घृणि सूर्याय नम:' है।
- प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में सूर्य मंत्र का जप करना चाहिए।
- सृष्टि में सबसे पहले सूर्यस्वरूप प्रकट हुआ इसलिए इनका नाम आदित्य पड़ा। सूर्य का एक अन्य नाम सविता भी है।

अंतरिक्ष के चमकीले चमत्कार हैं सूर्यदेव

यह एक विशालकाय तारा है जिसके चारों ओर आठों ग्रह और अनेक उल्काएं चक्कर लगाते रहते हैं। वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा माना गया है। सूर्य के कारण ही जीवन है अन्यथा अंधकार है।

सूर्य : सूर्य मुखिया है, सौर देवता, आदित्यों में से एक, कश्यप और उनकी पत्नियों में से एक ,अदिति के पुत्र ,इंद्र का या डायुस का पितर ।सूर्य का जन्म स्थान कलिंग देश,केंद्र स्थान है। उनके बाल और हाथ स्वर्ण के हैं। उनके रथ को सात घोड़े खींचते हैं, जो सात चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे रवि के रूप में रविवार या इतवार के स्वामी हैं। शिव और विष्णु के एक पहलू के रूप में मानते हैं। सूर्य को वैष्णव द्वारा सूर्य नारायण कहा जाता है। सूर्य को शिव के आठ

रूपों में से एक कहा जाता है, जिसका नाम अष्टमूर्ति है।उन्हें सत्व गुण का कहाजाता है और वे आत्मा, राजा, अत्यधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों या पिता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सूर्य ग्रह से होती कौन-सी बीमारी जानिए: सूर्य के कारण धरती पर हजारों वनस्पतियां, पशु और समुद्र में जीव-जंतुओं का जन्म होता है तो वे सभी सूर्य पुत्र ही हैं। जिस तरह घर के मुखिया के कमजोर होने पर घर की स्थिति भी कमजोर होती है उसी तरह कुंडली में सूर्य के कमजोर होने पर अन्य ग्रह भी अच्छे फल नहीं देते।

सूर्य की बीमारी :
व्यक्ति अपना विवेक खो बैठता है।
दिमाग समेत शरीर का दायां भाग सूर्य से प्रभावित होता है।
सूर्य के अशुभ होने पर शरीर में अकड़न आ जाती है।
मुंह में थूक बना रहता है।
दिल का रोग हो जाता है जैसे धड़कन का कम ज्यादा होना।
मुंह और दांतों में तकलीफ हो जाती है।
बेहोशी का रोग हो जाता है।
सिरदर्द बना रहता है।

सूर्य महाग्रह मंत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्र्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतो स्ति दिवाकरम् ॥

सूर्यदेव का स्वरूप

सूर्यदेव की दो भूजाएं हैं। वह कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं।सूर्यदेव की प्रतिमा का स्वरूप ऐसा ही होना चाहिए।विशेष बातें वेदी के मध्य में श्वेत चावलों पर सूर्य देव की प्रतिमा की स्थापना करनी चाहिए। सूर्य के अधिदेव शिव माने गए हैं। सूर्य को गुड़ और चावल से बनी खीर का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

सूर्यदेव खराब कैसे होते है :

पिता का सम्मान न करना।
देर से सोकर उठना।
घर की पूर्व दिशा दूषित होने से।
शुक्र, राहु और शनि के साथ मिलने से मंदा फल।
रात्रि के कर्मकांड करना।
राजाज्ञान्याय का उल्लंघन करना।
विष्णु का अपमान।

सूर्य ग्रह के खराब होने पर क्या होता हैं :

गुरु, देवता और पिता साथ छोड़ देते हैं।
राज्य की ओर से दंड मिलता है।
नौकरी चली जाती है।
सोना खो जाता है या चोरी हो जाता है।
यदि घर पर या घर के आस पास लाल गाय या भूरी भैंस है तो वह खो जाती है या मर जाती है।
यदि सूर्य और शनि एक ही भाव में हो तो घर की स्त्री को कष्ट होता है।

यदि सूर्य और मंगल साथ हो और चन्द्र और केतु भी साथ हो तो पुत्र, मामा और पिता को कष्ट।

सूर्य का व्रत

सूर्य का व्रत एक वर्ष या 30 रविवारों तक अथवा 12 रविवारों तक करना चाहिए। व्रत के दिन लाल रंग का वस्त्र धारण करके ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम: इस मंत्र का 12 या 5 अथवा 3 माला जप करें। जप के बाद शुद्ध जल, रक्त चंदन, अक्षत, लाल पुष्प और दूर्वा से सूर्य को अर्घ्य दें। भोजन में गेहूं की रोटी, दलिया, दूध, दही, घी और चीनी खाएं। नमक नहीं खाएं। इस व्रत के प्रभाव से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाता है। तेजस्विता बढ़ती है। शारीरिक रोग शांत होते हैं। आरोग्यता प्राप्त होती है।भगवान सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा छ: वर्ष की होती है। इनकी प्रसन्नता के लिए इन्हें नित्य सूर्यार्घ्य देना चाहिए। इनका सामान्य मंत्र है ॐ घृणिं सूर्याय नम: इसका एक निश्चित संख्या में रोज जप करना चाहिए।

सृष्टि करने वाला सूर्यदेव

जब अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हुए तब उनके मुंह से ॐ महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही भगवान सूर्यदेव का शरीर है।ब्रह्माजी के चारों मुखों से चार वेद आविर्भूत हुए और ओंकार के तेज से मिल कर जो स्वरूप उत्पन्न हुआ वही सूर्यदेव हैं।सूर्यदेव का एक नाम सविता भी है। जिसका अर्थ होता है सृष्टि करने वाला। इन्हीं से जगत उत्पन्न हुआ है। यही सनातन परमात्मा हैं।

सूर्य उपासना :

सूर्य उपासना में रविवार का व्रत अनिवार्य है। व्रत के दिन भोजन में नमक का उपयोग न करें। रविवार के दिन खुले आकाश के नीचे पूर्व की ओर मुंह करके शुद्ध ऊन के आसन या कुशासन पर बैठकर काले तिल, जौ, गूगल, कपूर और घी मिला हुआ शाकल तैयार करके आम की लकड़ियों से अग्नि को प्रदीप्त कर उक्त मंत्र से एक सौ आठ आहुतियां दें।

सूर्य उपासना कैसे करें :

सुख सौभाग्य की वृद्धि के लिए, दु:ख दारिद्र्य को दूर करने के लिए रोग व दोष के शमन के लिए इस प्रभावकारी मंत्र की साधना रविवार के दिन करनी चाहिए।

ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः क्लीं ॐ।

लगाकर इसी मंत्र का सौ बार जप करें। जप करते समय दोनों भौंहों के मध्य भाग में भगवान सूर्य का ध्यान करते रहें। इस तरह ग्यारह दिन तक करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। प्रतिदिन स्नान के बाद ताम्र पात्र में जल भरकर इसी मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। जमीन पर जल न गिरे नीचे दूसरा ताम्र पात्र भी रख सकते है। इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें। इतना करने से आयुष्य, आरोग्य, ऐश्वर्य और कीर्ति की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

सूर्य को अच्छा बनाने के तरीके :

घर की पूर्व दिशा वास्तुशास्त्र अनुसार ठीक करें।
भगवान विष्णु की उपासना।
बंदर, पहाड़ी गाय या कपिला गाय को भोजन कराएं।
रविवार का व्रत रखना।
मुंह में मीठा डालकर ऊपर से पानी पीकर ही घर से निकलें।
पिता का सम्मान करें। प्रतिदिन उनके चरण छुएं।
गायत्री मंत्र का जाप करें।
तांबा, गेहूं एवं गुड़ का दान करें।
प्रत्येक कार्य का प्रारंभ मीठा खाकर करें।

तांबे के एक टुकड़े को काटकर उसके दो भाग करें। एक को पानी में बहा दें तथा दूसरे को जीवनभर साथ रखें। ॐ रं रवये नमः या ॐ घृणी सूर्याय नमः 108 बार जाप करें।

चंद्रमा

चंद्रमा (Moon) का वैदिक ही नहीं अपितु खोगोलीय महत्व भी है। सौर मंडली में चंद्रमा का स्थान सभी ग्रह से भिन्न है। इस लेख में हम ज्योतिष में चंद्रमा का क्या महत्व है? मानव जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही हम इसका यंत्र. मंत्र, जड़ व रत्न क्या है? इसके बारे में भी जानने की कोशिश करेंगे। तो आइये जानते हैं चंद्रमा के बारे में-

चंद्र ग्रह

वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा को मन का कारक माना जाता है। ज्योतिषियों की माने तो चंद्रमा के प्रभाव से ही जातक मन विचलित व स्थिर होता है। कहते हैं मन यदि नियंत्रण में हो तो सब कुछ आसानी से हो जाता है, परंतु यदि मन अस्थिर हो तो कार्य पूर्ण होने में परेशानियां तो आती ही हैं साथ ही कार्य भी कुशला से नहीं होता कुल मिलाकर इसमें नुकसान ही होता है। खगोलीय दृष्टि से चंद्रमा (Moon) का काफी महत्व है। समुंद्र में ज्वार आने से लेकर ग्रहण लगने तक में चंद्रमा का योगदान होता है। सूर्य के बाद आसमान में सबसे अधिक चमकदार ग्रह चंद्रमा है। चंद्रमा की कक्षीय दूरी पृथ्वी के व्यास का 30 गुना है इसीलिए आसमान में सूर्य और चंद्रमा का आकार हमेशा सामान नजर आता है।

वैदिक ज्योतिष में चंद्र ग्रह का महत्व

वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा (Moon) नौ ग्रहों के क्रम में सूर्य के बाद दूसरा ग्रह है। वैदिक ज्योतिष में यह मन, माता, मानसिक स्थिति, मनोबल, द्रव्य वस्तुओं, सुख-शांति, धन-संपत्ति, बायीं आँख, छाती आदि का कारक होता है। ज्योतिष के मुताबिक चंद्रमा राशियों में कर्क राशि का स्वामी और नक्षत्रों में रोहिणी, हस्त और श्रवण नक्षत्र का स्वामी है। सभी ग्रहों में चंद्रमा की गति सबसे तेज़ होती है। चंद्रमा के गोचर की अवधि सबसे कम होती है। यह लगभग सवा दो दिनों में एक राशि से दूसरी राशि में गोचर कर जाता है। वैदिक ज्योतिष शास्त्र में राशिफल को ज्ञात करने के लिए व्यक्ति की चंद्र राशि की ही गणना की जाती है। क्योंकि यह सबसे प्रभावी माना जाता है। चंद्र राशि की गणना ऐसे की जाती है कि जातक के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है वह जातक की चंद्र राशि कहलाती है। ज्योतिष में चंद्र को स्त्री ग्रह माना गया है।

ज्योतिष के अनुसार मनुष्य जीवन पर चंद्रमा का प्रभाव

- शारीरिक बनावट पर चंद्रमा का प्रभाव देखा जाए तो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस जातक की कुंडली के लग्न भाव में चंद्रमा विराजमान होता है, वह जातक सुंदर और आकर्षक होता है। इसके साथ ही वह साहसी व धैर्यवान होता है। उसका स्वभाव शांत होता है। चंद्र ग्रह के प्रभाव के कारण जातक अपने जीवन में सिद्धांतों को अधिक महत्व देता है। सिद्धांतवादी होने से वह जातक सामाजिक भी होता है। जातक थोड़ा घुमक्ड़ी होता है। इसके साथ ही लग्न भाव में बैठा चंद्रमा (Moon) जातक को कल्पनीक तौर पर प्रबल बनाता हैं। इसके साथ ही जातक संवेदनशील और भावुक भी होता है।
- ज्योतिष में यदि किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा मजबूत हो तो जातक को इसके सकारात्मक फल प्राप्त होता है। प्रबल चंद्रमा के चलते जातक मानसिक रूप से सुखी रहता है। मनमोस्थिति उसकी मजबूत होती है। वह विचलित नहीं होता है। अपने विचार व फैसलों पर जातक संदेह नहीं करता है। बात परिवार की करें तो जातका परिवार में अपने माता से अच्छे संबंध रहते हैं और माँ की सेहत भी अच्छी रहती है।

- ज्योतिष की माने तो जिस जातक की कुंडली में चंद्रमा कमजोर होते हैं उन जातकों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसमें से मानसिक तनाव के साथ ही आत्मबल की कमी भी शामिल हैं। इसके अलावा जातका माता के साथ संबंध मधुर नहीं रहते हैं। वैवाहिक जीवन में भी शांति नहीं रहती है। जातक क्रोधी व वह अपने वाणी पर नियंत्रण नहीं रख पाता है। जिसके कारण जातक को निराशा का सामना करना पड़ता है। जातक की स्मृति शक्ति क्षीण हो जाती है। माता के लिए किसी न किसी प्रकार की समस्या बनी रहती है।

चंद्रमा का पौराणिक महत्व

चंद्रमा का हिंदू पौराणिक कथाओं में काफी जिक्र किया गया है। कथाओं में भी चंद्रमा को मन को नियंत्रित करने वाला व जल का देव बताया गया है। हिंदू धर्म में इन्हें देव की उपाधि प्राप्त है। आपने भगवान शिव के सिर पर चंद्रमा को देखा होगा। इसके साथ ही शिव के साथ ही सोमवार का दिन चंद्र देव का भी दिन माना जाता है। हिंदू धर्म शास्त्रों में भगवान शिव शंकर को चंद्रमा का स्वामी माना जाता है। सनातन धर्म ग्रंथ श्रीमद्भगवत गीता में चंद्र देव को महर्षि अत्रि और अनुसूया के पुत्र के रूप में उल्लेखित किया गया है। पौराणिक शास्त्रों में चंद्रमा को बुध का पिता कहा जाता है और दिशाओं में यह वायव्य दिशा का स्वामी होता है।

यंत्र - चंद्र यंत्र
जड़ - खिरनी
रत्न – मोती
रंग – सफेद
उपाय – यदि किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा कमजोर या कम प्रभावी है तो उस जातक को उपाय हेतु भोलेनाथ की पूजा करनी चाहिए। जिससे जातकों को चंद्र (Moon) देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। ज्योतिष के अनुसार चंद्रमा की महादशा दस वर्ष तक चलती है।

ज्योतिष के अनुसार मनुष्य जीवन पर चंद्रमा का प्रभाव

शारीरिक बनावट एवं स्वभाव - ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, जिस व्यक्ति के लग्न भाव में चंद्रमा होता है, वह व्यक्ति देखने में सुंदर और आकर्षक होता है और स्वभाव से साहसी होता है। चंद्र ग्रह के प्रभाव से व्यक्ति अपने सिद्धांतों को महत्व देता है। व्यक्ति की यात्रा करने में रुचि होती है। लग्न भाव में स्थित चंद्रमा व्यक्ति को प्रबल कल्पनाशील व्यक्ति बनाता है। इसके साथ ही व्यक्ति अधिक संवेदनशील और भावुक होता है। यदि व्यक्ति के आर्थिक जीवन की बात करें तो धन संचय में उसे कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

बली चंद्रमा के प्रभाव - यदि किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा बली हो तो जातक को इसके सकारात्मक फल प्राप्त होते है। बली चंद्रमा के कारण जातक मानसिक रूप से सुखी रहता है। उसे मानसिक शांति प्राप्त होती है तथा उसकी कल्पना शक्ति भी मजबूत होती है। बली चंद्रमा के कारण जातक के माता जी संबंध मधुर होते हैं और माता जी का स्वास्थ्य भी8 अच्छा रहता है।

पीड़ित चंद्रमा के प्रभाव: पीड़ित चंद्रमा के कारण व्यक्ति को मानसिक पीड़ा होती है। इस दौरान व्यक्ति की स्मृति कमज़ोर हो जाती है। माता जी को किसी न किसी प्रकार की दिक्कत बनी रहती है। वहीं घर में पानी की कमी हो जाती है। कई बार जातक इस दौरान आत्महत्या करनी की कोशिश करता है।

रोग - यदि जन्म कुंडली में चंद्रमा किसी क्रूर अथवा पापी ग्रह से पीड़ित होता है तो जातक की सेहत पर इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इससे जातक को मस्तिष्क पीड़ा, सिरदर्द, तनाव, डिप्रेशन, भय, घबराहट, दमा, रक्त से संबंधित विकार, मिर्गी के दौरे, पागलपन अथवा बेहोशी आदि की समस्या होती है।

कार्यक्षेत्र - ज्योतिष में चंद्र ग्रह से सिंचाई, जल से संबंधित कार्य, पेय पदार्थ, दूध, दुग्ध उत्पाद (दही, घी, मक्खन) खाद्य पदार्थ, पेट्रोल, मछली, नौसेना, टूरिज्म, आईसक्रीम, ऐनीमेशन आदि का कारोबार देखा जाता है।

उत्पाद - सभी रसदार फल तथा सब्जी, गन्ना, शकरकंद, केसर, मक्का, चांदी, मोती, कपूर जैसी वस्तुए चंद्रमा के अधिकार क्षेत्र में आती हैं।

स्थान - ज्योतिष में चंद्र ग्रह हिल स्टेशन, पानी से जुड़े स्थान, टंकियाँ, कुएं, जंगल, डेयरी, तबेला, फ्रिज आदि को दर्शाता है।

जानवर तथा पक्षी - कुत्ता, बिल्लू, सफेद चूहे, बत्तक, कछुआ, मछली आदि पशु पक्षी ज्योतिष में चंद्र ग्रह द्वारा दर्शायी जाती हैं।

जड़ - खिरनी।
रत्न - मोती।
रुद्राक्ष - दो मुखी रुद्राक्ष।
यंत्र - चंद्र यंत्र।
रंग - सफेद
चंद्र ग्रह के उपाय के तहत व्यक्ति को सोमवार का व्रत धारण और चंद्र के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चंद्र ग्रह का वैदिक मंत्र
ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।।

चंद्र ग्रह का तांत्रिक मंत्र
ॐ सों सोमाय नमः

चंद्रमा का बीज मंत्र
ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः

खगोल विज्ञान में चंद्रमा का महत्व

खगोल शास्त्र में चंद्रमा को पृथ्वी ग्रह का उपग्रह माना गया है। जिस प्रकार धरती सूर्य के चक्कर लगाती है ठीक उसी प्रकार चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पृथ्वी पर स्थित जल में होने वाली हलचल चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण होती है। सूर्य के बाद आसमान पर सबसे चमकीला चंद्रमा ही है। जब चंद्रमा परिक्रमा करते हुए सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तो यह सूर्य को क लेता है तो उस स्थिति को सूर्य ग्रहण कहते हैं।

चंद्र के बारे में रोचक जानकारी:

- चन्द्र को सोम के रूप में भी जाना जाता है।
- चंद्र सोम के रूप में वे 'सोम वार' के स्वामी हैं।
- उन्हें वैदिक चंद्र देवता सोम के साथ पहचाना जाता है।
- चंद्र सत्व गुण वाले हैं तथा मन, माता की रानी का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- वेदों में चन्द्र को काल पुरुष का मन कहा गया है।
- चंद्र का विवाह दक्ष प्रजापति की नक्षत्र रूपी 27 कन्याओं से हुआ, जिनसे अनेक प्रतिभाशाली पुत्र हुए थे।
- पुराणों में चंद्र को जवान, सुंदर, गौर, द्विबाहु के रूप में वर्णित किया गया है।
- चंद्र के हाथों में एक मुगदर और एक कमल रहता है।

- चंद्र हर रात पूरे आकाश में अपना रथ (चांद) चलाते हैं।
- चंद्र के रथ को 10 सफेद घोड़े या मृग द्वारा खींचा जाता है।
- ब्रह्माजी ने चंद्र को नक्षत्र, वनस्पतियों, ब्राह्मण व तप का स्वामी नियुक्त किया है।
- मंत्र- 'ॐ सों सोमाय नम:' है।

ज्योतिष के अनुसार मनुष्य जीवन पर चंद्रमा का प्रभाव

शारीरिक बनावट एवं स्वभाव - ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, जिस व्यक्ति के लग्न भाव में चंद्रमा होता है, वह व्यक्ति देखने में सुंदर और आकर्षक होता है और स्वभाव से साहसी होता है। चंद्र ग्रह के प्रभाव से व्यक्ति अपने सिद्धांतों को महत्व देता है। व्यक्ति की यात्रा करने में रुचि होती है। लग्न भाव में स्थित चंद्रमा व्यक्ति को प्रबल कल्पनाशील व्यक्ति बनाता है। इसके साथ ही व्यक्ति अधिक संवेदनशील और भावुक होता है। यदि व्यक्ति के आर्थिक जीवन की बात करें तो धन संचय में उसे कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

बली चंद्रमा के प्रभाव - यदि किसी जातक की कुंडली में चंद्रमा बली हो तो जातक को इसके सकारात्मक फल प्राप्त होते है। बली चंद्रमा के कारण जातक मानसिक रूप से सुखी रहता है। उसे मानसिक शांति प्राप्त होती है तथा उसकी कल्पना शक्ति भी मजबूत होती है। बली चंद्रमा के कारण जातक के माता जी संबंध मधुर होते हैं और माता जी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

पीड़ित चंद्रमा के प्रभाव: पीड़ित चंद्रमा के कारण व्यक्ति को मानसिक पीड़ा होती है। इस दौरान व्यक्ति की स्मृति कमज़ोर हो जाती है। माता जी को किसी न किसी प्रकार की दिक्कत बनी रहती है। वहीं घर में पानी की कमी हो जाती है। कई बार जातक इस दौरान आत्महत्या करनी की कोशिश करता है।

रोग - यदि जन्म कुंडली में चंद्रमा किसी क्रूर अथवा पापी ग्रह से पीड़ित होता है तो जातक की सेहत पर इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इससे जातक को मस्तिष्क पीड़ा, सिरदर्द, तनाव, डिप्रेशन, भय, घबराहट, दमा, रक्त से संबंधित विकार, मिर्गी के दौरे, पागलपन अथवा बेहोशी आदि की समस्या होती है।

कार्यक्षेत्र - ज्योतिष में चंद्र ग्रह से सिंचाई, जल से संबंधित कार्य, पेय पदार्थ, दूध, दुग्ध उत्पाद (दही, घी, मक्खन) खाद्य पदार्थ, पेट्रोल, मछली, नौसेना, टूरिज्म, आईसक्रीम, ऐनीमेशन आदि का कारोबार देखा जाता है।

उत्पाद - सभी रसदार फल तथा सब्जी, गन्ना, शकरकंद, केसर, मक्का, चांदी, मोती, कपूर जैसी वस्तुए चंद्रमा के अधिकार क्षेत्र में आती हैं।

स्थान - ज्योतिष में चंद्र ग्रह हिल स्टेशन, पानी से जुड़े स्थान, टंकियाँ, कुएं, जंगल, डेयरी, तबेला, फ्रिज आदि को दर्शाता है।

जानवर तथा पक्षी - कुत्ता, बिल्लू, सफेद चूहे, बत्तक, कछुआ, मछली आदि पशु पक्षी ज्योतिष में चंद्र ग्रह द्वारा दर्शायी जाती हैं।

जड़ - खिरनी।
रत्न - मोती।
रुद्राक्ष - दो मुखी रुद्राक्ष।
यंत्र - चंद्र यंत्र।
रंग - सफेद
चंद्र ग्रह के उपाय के तहत व्यक्ति को सोमवार का व्रत धारण और चंद्र के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चंद्र ग्रह का वैदिक मंत्र

ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।।

चंद्र ग्रह का तांत्रिक मंत्र

ॐ सों सोमाय नमः

चंद्रमा का बीज मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः

खगोल विज्ञान में चंद्रमा का महत्व

खगोल शास्त्र में चंद्रमा को पृथ्वी ग्रह का उपग्रह माना गया है। जिस प्रकार धरती सूर्य के चक्कर लगाती है ठीक उसी प्रकार चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पृथ्वी पर स्थित जल में होने वाली हलचल चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण होती है। सूर्य के बाद आसमान पर सबसे चमकीला चंद्रमा ही है। जब चंद्रमा परिक्रमा करते हुए सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तो यह सूर्य को क लेता है तो उस स्थिति को सूर्य ग्रहण कहते हैं।

चंद्रमा का पौराणिक महत्व

हिन्दू धर्म में चंद्र ग्रह को चंद्र देवता के रूप में पूजा जाता है। सनातन धर्म के अनुसार चंद्रमा जल तत्व के देव हैं। चंद्रमा को भगवान शिव ने अपने सिर पर धारण किया है। सोमवार का दिन चंद्र देव का दिन होता है। शास्त्रों में भगवान शिव को चंद्रमा का स्वामी माना जाता है।

अतः जो व्यक्ति भोलेनाथ की पूजा करते हैं उन्हें चंद्र देव का भी आशीर्वाद प्राप्त होता है। चंद्रमा की महादशा दस वर्ष की होती है। श्रीमद्भगवत के अनुसार, चंद्र देव महर्षि अत्रि और अनुसूया के पुत्र हैं। चंद्रमा सोलह कलाओं से युक्त हैं। पौराणिक शास्त्रों में चंद्रमा को बुध का पिता कहा जाता है और दिशाओं में यह वायव्य दिशा का स्वामी होता है।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि हिन्दू ज्योतिष में चंद्र ग्रह का महत्व कितना व्यापक है। मनुष्य के शरीर में 60 प्रतिशत से भी अधिक पानी होता है। इससे आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि चंद्रमा मनुष्य पर किस तरह का प्रभाव डालता होगा।

सुंदर और गौर वर्ण के है चंद्रदेव

सूर्य के बाद धरती के उपग्रह चन्द्र का प्रभाव धरती पर पूर्णिमा के दिन सबसे ज्यादा रहता है। जिस तरह मंगल के प्रभाव से समुद्र में मूंगे की पहाड़ियां बन जाती हैं और लोगों का खून दौड़ने लगता है उसी तरह चन्द्र से समुद्र में ज्वार-भाटा उत्पत्न होने लगता है।

चंद्र : चंद्र को सोम के रूप में भी जाना जाता है और उन्हें वैदिक चंद्र देवता सोम के साथ पहचाना जाता है। वह ओस से जुड़े हुए हैं और जनन क्षमता के देवताओं में से एक हैं। उन्हें निषादिपति भी कहा जाता है निशा यानी कि रात आदिपति यानी कि देवता।चन्द्र का जन्म स्थान यमुना तट,आग्नेय है ।उन्हें जवान, सुंदर, गौर, द्विबाहु के रूप में वर्णित किया गया है और उनके हाथों में एक मुगदर और एक कमल रहता है। वे हर रात पूरे आकाश में अपना रथ चांद चलाते हैं, जिसे दस सफेद घोड़े या मृग द्वारा खींचा जाता है।सोम के रूप में वे, सोमवारम या सोमवार के स्वामी हैं। वे सत्व गुण वाले हैं और मन, माता की रानी का प्रतिनिधित्व करते हैं।उनका दर्शन प्रजापति की बेटियों से विवाह हुआ है। इसलिए उन्होंने 27 पत्नियां हैं, जो सात सात नक्षत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

चन्द्रमा से होने वाली बीमारियां :
सिरदर्द
छोटी मोटी दुर्घटनाएं
ह्रदय रोग
कब्ज़ , पेशाब सम्बन्धी बीमारी
पेट में गैस बने
मानसिक चिंता
घबराहट होना
काम में मन नहीं लगना

चन्द्र ग्रह मंत्र

दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
मामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

चन्द्रमा का स्वरूप
चन्द्रमा गौर वर्ण, श्वेत वस्त्र और श्वेत अश्वयुक्त हैं तथा उनके आभूषण भी श्वेत वर्ण के हैं।चन्द्रमा की प्रतिमा इसी तरह की होनी चाहिए।विशेष श्वेत चावलों की वेदी के दक्षिण पूर्व कोण पर चन्द्र देव की स्थापना करनी चाहिए।
पार्वती जी को चन्द्रमा का अधिदेव माना जाता है। चन्द्रमा को घी और दूध से बने पदार्थों का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।चंद्र का पौधा पलाश उससे मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है।

कैसे होते चन्द्र खराब :

घर का वायव्य कोण दूषित होने पर भी चन्द्र खराब हो जाता है।
घर में जल का स्थान दिशा यदि दूषित है तो भी चन्द्र मंदा फल देता है।
पूर्वजों का अपमान करने और श्राद्ध कर्म नहीं करने से भी चन्द्र दूषित हो जाता है।
माता का अपमान करने या उससे विवाद करने पर चन्द्र अशुभ प्रभाव देने लगता है।
शरीर में जल यदि दूषित हो गया है तो भी चन्द्र का अशुभ प्रभाव पड़ने लगता है।
गृह कलह करने और पारिवारिक सदस्य को धोखा देने से भी चन्द्र मंदा फल देता है।
राहु, केतु या शनि के साथ होने से तथा उनकी दृष्टि चन्द्र पर पड़ने से चन्द्र खराब फल देने लगता है।

चंद्रमा दोष के लक्षण :

जुखाम, पेट की बीमारियों से परेशानी।
घर में असमय पशुओं की मत्यु की आशंका।
अकारण शत्रुओं का बढ़ना।
धन का हानि।
शुभ चन्द्र व्यक्ति को धनवान और दयालु बनाता है। सुख और शांति देता है। भूमि और भवन के मालिक चन्द्रमा से चतुर्थ में शुभ ग्रह होने पर घर संबंधी शुभ फल मिलते हैं। मंत्र- ॐ सों सोमाय नम:

चन्द्रमा की पूजा विधि :

चंद्रमा के अशुभता की शांति के लिये निम्नलिखित मंत्रो में से किसी एक मंत्र का 44 हज़ार या सवा लाख की संख्या में अनुष्ठान करना चाहिये। पूजा प्रारम्भ करने से पहले स्वेत पुष्प , मिस्ठान, अक्षत एवं गंगाजल ले कर अनूष्ठान का संकलल्प , ध्यान व आवाहनादि करे।जप करने के लिए चन्दन की माला सर्वोत्तम होता है अगर चन्दन की माला न

मिले तो रुद्राक्ष या तुलसी के माला से भी जप किआ जा सकता है।चंद्र पूजा करने से मानसिक शांति, नेत्र विकार में लाभ,धन लाभ, सरदर्द से राहत, आत्मविस्वास, माँ के स्वास्थ में लाभ और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

चंद्र उपाय :

- भगवान शिव की आराधना करें।
- सोमवार का व्रत।
- ऊं नम शिवाय मंत्र का रूद्राक्ष की माला से 11 माला जाप करें।
- बड़े बुजुर्गों, ब्रह्मणों, गुरूओं का आशीर्वाद लें।
- सोमवार को सफेद कपड़े में मिश्री बांधकर जल में प्रवाहित करें।
- चांदी की अंगूठी में चार रत्ती का मोती सोमवार को जाएं हाथ अनामिका में धारण करें।
- शीशे की गिलास में दूध, पानी पीने से परेहज करें।
- 28 वर्ष के बाद विवाह का निर्णय लें।
- लाल रंग का रूमाल हमेशा जेब में रखें।
- माता-पिता की सेवा से विशेष लाभ, प्रतिदिन माता के पैर छूना।
- मोती रत्न धारण करे।
- पानी या दूध को साफ पात्र में सिरहाने रखकर सोएं और सुबह कीकर के वृक्ष की जड़ में डाल दें।
- चावल, सफेद वस्त्र, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, बैल, दही और मोती दान करना चाहिए।
- दो मोती या दो चांदी के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा पानी में बहा दें तथा दूसरे को अपने पास रखें।
- कुंडली के छठे भाव में चन्द्र हो तो दूध या पानी का दान करना मना है।
- यदि चन्द्र 12 वां हो तो धर्मात्मा या साधु को भोजन न कराएं और न ही दूध पिलाएं।
- सोमवार को सफेद वस्तु जैसे दही, चीनी, चावल, सफेद वस्त्र,1 जोड़ा जनेऊ, दक्षिणा के साथ दान करना।
- ॐ सोम सोमाय नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है।
- चंद्र ओषधि स्नान :पञ्चगव्य गौ का गोबर,मूत्र,दूध,दही,घी, गज़मद,शंख सीप,गंगाजल,स्वेत चन्दन,स्फटिक को जल में डालकर स्नान करें जरूर लाभ होगा।

चंद्र ग्रह के व्रत और पूजन विधि

चन्द्रमा का व्रत 54 सोमवारों तक या 10 सोमवारों तक करना चाहिए। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण कर ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्राय नम: इस मंत्र का 11, 5 अथवा 3 माला जप करें। भोजन में बिना नमक के दही, दूध, चावल, चीनी और घी से बनी चीजें ही खाएं।

इस व्रत को करने से व्यापार में लाभ होता है। मानसिक कष्टों की शांति होती है। विशेष कार्यसिद्धि में यह व्रत पूर्ण लाभदायक होता है।

चंद्र प्रदोष व्रत :

भगवान शिव की प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव की पूजा की जाती है। यह व्रत सबसे शुभ व महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रदोष व्रत चंद्र महीने के 13 वें दिन रखा जाता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति के सारे पाप धुल जाते है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ऐसी धारणा है कि प्रदोष पूजा में शामिल होने के लिए सभी देवी देवता पृथ्वी पर उतरते हैं। अपने अपने अक्ष पर जब सूर्य व चंद्रमा एक क्षैतिज रेखा में होते हैं तब उस समय को प्रदोष कहा जाता है। इस दौरान भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए रखा गया व्रत बहुत शुभ माना जाता है। सोमवार के दिन त्रयोदशी पड़ने पर किया जाने वाला व्रत आरोग्य प्रदान करता है और इंसान की सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है।

व्रत विधि :

प्रदोष व्रत करने के लिए मनुष्य को त्रयोदशी के दिन सूर्य उदय से पहले उठना चाहिए। नित्यकर्मों से निवृत होकर, भगवान भोलेनाथ का स्मरण करें। इस दिन व्रती पूरा दिन उपवास रखता है। पूरे दिन उपावस रखने के बाद सूर्यास्त से एक घंटा पहले, स्नान आदि कर श्वेत वस्त्र धारण किए जाते है।

पूजन स्थल को गंगाजल या स्वच्छ जल से शुद्ध करने के बाद गाय के गोबर से लीपकर मंडप तैयार किया जाता है। इस मंडप में पांच रंगों का उपयोग करते हुए रंगोली बनाई जाती है। प्रदोष व्रत कि आराधना करने के लिए कुशा के आसन का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार पूजन की तैयारियां करके उतर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे और भगवान शंकर का पूजन करना चाहिए। पूजन में भगवान शिव के मंत्र ऊँ नम: शिवाय का जाप करते हुए शिव को जल चढ़ाना चाहिए।

पूर्णिमा तिथि चन्द्रमा को सबसे प्रिय होती है। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा अपने पूरे आकार में होता है। पूर्णिमा के दिन पूजा पाठ करना और दान देना बेहद शुभ माना जाता है। बैशाख, कार्तिक और माघ की पूर्णिमा को तीर्थ स्नान और दान पुण्य दोनों के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। इस दिन पितरों का तर्पण करना भी शुभ माना जाता है।

चंद्र पूजा :

चंद्र पूजा करने से मानसिक शांति, नेत्र विकार में लाभ,धन लाभ, सरदर्द से राहत, आत्मविस्वास, माँ के स्वास्थ में लाभ और आरोग्य की प्राप्ति होती है।प्रत्यक पूर्णमासी को पाठोपरान्त चंद्र देव को चांदी या त्तल के लोटे में शुद्ध जल ,स्वेत चंदन, स्वेत पुष्प आदि डालकर अर्ध्य देना अति शुभ और फलदायी होता है।इसके बाद चंद्र गायत्री मंत्र का पाठ करै। सुनुश्चित संख्या में जप पूर्ण होने के बाद उस मन्त्र का दशमांश संख्या में हवन करे तर्पन और मार्जन भी जरूर कर लेना चाहिये। ।

चंद्र दोष शांति :

- चांदी के बर्तनों का अधिक से अधिक प्रयोग करना तथा जिस पलंग पर आप सोते है उसके पायो में चांदी की कील ठुकवाए।
- जल में कच्चा दूध मिलाकर पीपल पर चढाए रविवार छोड़कर।
- संकल्प लेकर 16 सोमवार का व्रत करे।
- शिशे के गिलास या बर्तनों का प्रयोग न करे।
- मोती की माला गले मे पहने या चांदी का कड़ा सीधे हाथ में पहने।
- सोमवार को सफ़ेद वस्तु का दान करे।
- सोमवार को कन्याओ को खीर खिलाए।

मंगल

मंगल ग्रह सौर मंडल का सबसे लाल ग्रह माना जाता है। इसकी दूरी पृथ्वी से काफी है फिर भी इसका असर हमारे जीवन में पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। मंगल ग्रह का वैदिक ज्योतिष में भी काफी महत्व है। इन्हें आवेश व ऊर्जा का कारक माना जाता है। इस लेख में हम मंगल ग्रह के बारे में विस्तार से जानेंगे। लेख में हम मंगल (Mars) क्या है?, मंगल ग्रह का क्या ज्योतिषीय महत्व है?, मंगल ग्रह की पौराणिक मान्यता क्या है? मानव जीवन पर मंगल कैसे असर

डालता है? इसके साथ ही मंगल मंत्र उपाय व रत्न के बारे में भी जानकारी दे रहे हैं। जो आपके लिए काफी फ़ायदेमंद साबित होगी। तो आइये जानते हैं मंगल ग्रह के बारे में -

मंगल ग्रह

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मंगल ग्रह सौर मंडल का चौथा ग्रह है। इसका रंग लाला व यह पृथ्वी के समान स्थलीय ग्रह है। इस ग्रह पर जीवन होने की बात कही जाती है। अब बात करते हैं मंगल ग्रह के ज्योतिष पक्ष की, ज्योतिष में मंगल ग्रह को पराक्रम का कारक माना जाता है। ज्योतिष मंगल को एक क्रूर ग्रह के रूप में उल्लेखित करते हैं। मंगल (Mars) ऐसा ग्रह है जो किसी के जीवन में अमंगल पैदा कर दे।

मंगल ग्रह का ज्योतिषीय महत्व?

मंगल ग्रह का ज्योतिष में अलग ही महत्व है। इस मंगल को मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी और पराक्रम व ऊर्जा का कारक माना जाता है। इसलिए इस ग्रह के जातक तेज व पराक्रमी होते हैं। ज्योतिष की माने तो मंगल कुंडली में किस भाव में विराजमान हैं उनका प्रभाव उसी तरह से जातक पर पड़ता है।

मंगल के कारण ही बनता है कुंडली में मांगलिक दोष

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कुंडली में मंगल ग्रह का सही स्थिति में न होना जैसे पहले, चौथे, सातवें व बारहवें में भाव में विराजने पर कुंडली में मांगलिक दोष का निर्माण होता है।

बात दें कि इसी दोष के कारण जातक के विवाह में देरी होती है। माना जाता है कि मांगलिक को मांगलिक के साथ ही विवाह करना चाहिए। ऐसा न होने से वर वधु के जीवन में परेशानियां आती है। वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होता है। इसलिए ज्योतिष व पंडित मंगल (Mars) दोष निवारण करवाने की सलाह देते हैं।

मंगल का मानव जीवन पर प्रभाव

- मंगल का सबसे अधिक प्रभाव जातक के शरीर व स्वभाव पर पड़ता है। ज्योतिष की माने तो मंगल (Mars) यदि लग्न भाव में स्थित है तो ऐसी स्थिति में जातक आकर्षक व सुंदर व्यक्तित्व का धनि होता है। इसके साथ ही ऐसे जातक क्रोधी स्वभाव के होते हैं। चीजें अनुरूप न मिलने पर आवेश में आ जाते हैं। ये जातक सेना व सुरक्षा विभाग में कार्य करते हैं।
- जिन जातकों का मंगल बली होता है। वे जातक निर्णय लेने में जरा भी नहीं हीचकिचाते, जो निर्णय लेना होता है उसे ले लेते हैं। इसके साथ ही ऊर्जावाल रहता है। विपरीत से विपरीत परिस्थिति में वह पीछे नहीं हटता है। संघर्ष को हसते हुए अपनाते हैं। यदि आपका मंगल बली है तो यह केवल आपके लिए ही नहीं अच्छा है बल्कि आपके परिवार के सदस्यों के लिए भी शुभ है।
- ऐसे में आपके भाई- बहन करियर में अच्छा ग्रोथ करेंगे। परंतु यदि आप मंगल से पीड़ित हैं तो आपको काफी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कुंडली में मंगल का कमजोर होना उचित नहीं माना जाता है। ऐसी स्थिति में परिवारीक जीवन सुखमय नहीं होता है। दुर्घटना होने की भी संभावना बनी रहती है।

मंगल की पौराणिक मान्यता

हिंदू मान्यता के अनुसार मंगल (Mars) देवी पृथ्वी के पुत्र हैं, परंतु इस घटना के संबंध में दो पौराणिक कथाएं मिलती है। एक अंधका सुर व शिव युद्ध व दूसरा श्रीहरि के वाराह रूप से संबंध हैं। एक कथा में मंगल को शिव पृथ्वी का पुत्र बताया गया है तो दूसरे में विष्णु व पृथ्वी का यह दोनों ही कथाएं हिंदू पुराणों में पायी जाती हैं। इसके बाद ही मंगल को ग्रह की उपाधि मिली और ये सौर मंगल में स्थापित हुए।

यंत्र - मंगल यंत्र
मंत्र - ओम मंगलाय नमः
रत्न - मूँगा
रंग - लाल
जड़ - अनंत मूल
उपाय - मंगल ग्रह की शांति से लिए मंगलवार का उपवास व हनुमान की आराधना करनी चाहिए। लाल वस्त्र का दान करने से भी मंगल शांत होते हैं। उज्जैन में स्थित मंगलनाथ मंदिर में मंगल (Mars) दोष के लिए पूजा करना सबसे फलदायी माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में शिवलिंग की स्थापना ब्रम्हाजी ने की थी।

ज्योतिष के अनुसार मनुष्य जीवन पर मंगल का प्रभाव

शारीरिक बनावट एवं स्वभाव - जन्म कुंडली में लग्न भाव में मंगल ग्रह व्यक्ति के चेहरे में सुंदरता एवं तेज़ लाता है। व्यक्ति उम्र के हिसाब से युवा दिखाई देता है। यह जातक को पराक्रमी, साहसी और निडर बनाता है। लग्न में मंगल के प्रभाव से व्यक्ति अभिमान भी होता है। वह किसी प्रकार के दबाव में रहकर कार्य नहीं करता है। शारीरिक रूप से व्यक्ति बलवान होता है। व्यक्ति का स्वभाव क्रोधी होता है। ऐसे जातकों की सेना, पुलिस, इंजीनियरिंग क्षेत्र में रुचि होती है। मंगल का लग्न भाव होना मंगल दोष भी बनाता है।

बली मंगल के प्रभाव - मंगल की प्रबलता से व्यक्ति निडरता से अपने निर्णय लेता है। वह ऊर्जावान रहता है। इससे जातक उत्पादक क्षमता में वृद्धि होती है। विपरीत परिस्थितियों में भी जातक चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करता है और उन्हें मात भी देता है। बली मंगल का प्रभाव केवल व्यक्ति के ही ऊपर नहीं पड़ता है, बल्कि इसका प्रभाव व्यक्ति के पारिवारिक जीवन पर पड़ता दिखाई देता है। बली मंगल के कारण व्यक्ति के भाई-बहन अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति करते हैं।

पीड़ित मंगल के प्रभाव - यदि मंगल ग्रह कुंडली में कमज़ोर अथवा पीड़ित हो तो यह जातक के लिए समस्या पैदा करता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति को किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है। पीड़ित मंगल के कारण जातक के पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं आती हैं। जातक को शत्रुओं से पराजय, ज़मीन संबंधी विवाद, क़र्ज़ आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

रोग - कुंडली में मंगल पीड़ित हो तो व्यक्ति को विषजनित, रक्त संबंधी रोग, कुष्ठ, ख़ुजली, रक्तचाप, अल्सर, ट्यूमर, कैंसर, फोड़े-फुंसी, ज्वार आदि रोक होने की संभावना रहती है।

कार्यक्षेत्र - सेना, पुलिस, प्रॉपर्टी डीलिंग, इलेक्ट्रॉनिक संबंधी, इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग, स्पोर्ट्स आदि।

उत्पाद - मसूर दाल, रेल वस्त्र, ज़मीन, अचल संपत्ती, विद्युत उत्पाद, तांबें की वस्तुएँ आदि।

स्थान - आर्मी कैंप, पुलिस स्टेशन, फायर बिग्रेड स्टेशन, युद्ध क्षेत्र आदि।

पशु व पक्षी - मेमना, बंदर, भेड़, शेर, भेड़िया, सूअर, कुत्ता, चमगादड़ एवं सभी लाल पक्षी आदि।

जड़ - अनंत मूल।
रत्न - मूंगा।
रुद्राक्ष - तीन मुखी रुद्राक्ष।
यंत्र - मंगल यंत्र।
रंग - लाल।

मंगल ग्रह की शांति के लिए मंगलवार का व्रत धारण करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें। इसके अलावा मंगल से संबंधित इन मंत्रों का जाप करें-

मंगल का वैदिक मंत्र -

ॐ अग्निमूर्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम्।
अपां रेतां सि जिन्वति।।

मंगल का तांत्रिक मंत्र -

ॐ अं अंङ्गारकाय नम:

मंगल का बीज मंत्र -

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

खगोल विज्ञान में मंगल ग्रह

खगोल विज्ञान के अनुसार, मंगल ग्रह में आयरन ऑक्साइड की मात्रा सर्वाधिक है और इसलिए इसे लाल ग्रह कहा जाता है। यह पृथ्वी के समान ही स्थलीय धरातल वाला ग्रह है। विश्व के वैज्ञानिक समाज को मंगल ग्रह में जीवन की संभावना दिखाई देती हैं। हालाँकि निम्न वायुदाब के कारण मंगल पर तरल जल का अभाव है।

मंगल ग्रह का धार्मिक व पौराणिक महत्व

हिन्दू धर्म के अनुसार मंगल ग्रह को मंगल देव का प्रतिनिधित्व माना जाता है, जो एक युद्ध के देवता है। संस्कृत में इन्हें भौम अर्थात भूमि का पुत्र कहा गया है। शास्त्रों में मंगल देव के स्वरूप का वर्णन करते हुए उनकी चार भुजाएँ बतायी गई हैं। वह अपने एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में गदा, तीसरे हाथ में कमल तथा चौथे हाथ में शूल लिए हुए हैं और भेड़ उनकी सवारी है। इसके साथ ही मंगल ग्रह का संबंध हनुमान जी भी है। मंगलवार के जातक हनुमान जी का व्रत धारण करते हैं। हनुमान जी अपने भक्तों की भूत-पिशाच से रक्षा करते हैं।

भले ही मंगल ग्रह को क्रूर ग्रह कहा जाता है। परंतु आप सोचिए, जिस ग्रह का नाम ही मंगल है वह किसी के लिए अमंगल कैसे हो सकता है। हम जानते हैं कि सभी ग्रह के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभाव मनुष्य जीवन पर पड़ते हैं। उन नौ ग्रहों में मंगल ग्रह भी एक है।

मंगल ग्रह से जुड़ी विशेष बातें

- जब हिरण्यकशिपु का बड़ा भाई हिरण्याक्ष पृथ्वी को चुरा कर ले गया था तब भगवान ने वाराहावतार लिया और हिरण्याक्ष को मार कर पृथ्वी का उद्धार किया था। इस पर पृथ्वी ने प्रभु को पति रूप में पाने की इच्छा की। प्रभु ने उनकी मनोकामना पूरी की। इनके विवाह के फलस्वरूप मंगल की उत्पत्ति हुई।
- इनकी चार भुजाएं हैं तथा शरीर के रोम लाल रंग के हैं।
- इनके वस्त्रों का रंग भी लाल है। यह भेड़ के वाहन पर सवार हैं।
- इनके हाथों ने त्रिशूल, गदा, अभयमुद्रा तथा वरमुद्रा धारण की हुई है। पुराणों में इनकी बड़ी महिमा बताई गई है।
- मंगल प्रसन्न हो जाए तो मनुष्य की हर इच्छा पूरी हो जाती है।
- इनके नाम का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिल जाती है। यदि इनकी गति वक्री ना हो तो यह हर राशि में एक-एक पक्ष बिताते हुए बारह राशियों को ड़ेढ़ वर्ष में पार करते हैं।
- इनको शुभ व अशुभ दोनों प्रकार का ग्रह माना जाता है। इनकी महादशा सात वर्षों तक रहती है।
- इनकी शान्ति के लिए शिव उपासना, मंगलवार को व्रत और हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।
- मंगल मेष तथा वृश्चिक राशि के स्वामी हैं।

- इनका सामान्य मंत्र : ॐ अं अंगारकाय नम: है। इसके जाप का समय प्रात: काल का है। इसका एक निश्चित संख्या में, निश्चित समय में पाठ करना चाहिए।

आत्मविस्वास का प्रतिनिधान करते है मंगल

ग्रहों में मंगल को सेनापति का दर्जा दिया गया है। वो इसलिए क्योंकि मंगल अगर आप पर मेहरबान हो तो जीवन में हर ओर मंगल ही मंगल होता है। लेकिन कमजोर या अशुभ मंगल जिंदगी मे अमंगल का विष घोल देता है।

मंगल : मंगल, लाल ग्रह मंगल के देवता हैं। मंगल का जन्म स्थान अवन्ति देश,दक्षिण है। मंगल ग्रह को अंगारक भी कहा जाता है जो लाल रंग का है या भौम यानी कि भूमि का पुत्र। वह युद्ध के देवता हैं और ब्रह्मचारी हैं। उन्हें पृथ्वी या भूमि अर्थात पृथ्वी देवी की संतान माना जाता है।

वह वृश्चिक और मेष राशि के स्वामी हैं और मनोगत विज्ञान के एक शिक्षक हैं। उनकी प्रकृति तमस गुण वाली है और वे ऊर्जावान कार्रवाई, आत्मविश्वास और अहंकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।उन्हें लाल रंग या लौ के रंग में रंगा जाता है, चतुर्भुज, एक त्रिशूल, मुगदर, कमल और एक भाला लिए हुए चित्रित किया जाता है। उनका वाहन एक भेड़ा है। वे मंगलवार के स्वामी हैं। उनका वहाना एक राम है। वह मंगलयुद्ध या मंगलवार को अध्यक्षता करता है।

मंगल का नाम मंत्र :
ॐ अं अंगारकाय नम:।
ॐ भौं भौमाय नम:।।

मंगल के लिए वैदिक मंत्र :
ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्यअयम।अपा रेता सिजिन्नवति ।

मंगल का पौराणिक मंत्र :
ॐ धरणीगर्भसंभूतं विद्युतकान्तिसमप्रभम ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम ।।

मंगल के लिए तांत्रोक्त मंत्र :
ॐ हां हंस: खं ख:।
ॐ हूं श्रीं मंगलाय नम:।।
ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:।।।

मंगल गायत्री मंत्र :
ॐ क्षिति पुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि-तन्नो भौम: प्रचोदयात्।

मंगल का स्वरूप
मंगल शक्तिशाली स्वभाव का ग्रह है। यह व्यक्ति की नाभी पर निवास करता है जिस व्यक्ति कि कुण्डली में मंगल शुभ होता है। वह अपने पराक्रम का प्रयोग शुभ कर्यों में करता है।जबकि मंगल अशुभ होने पर व्यक्ति अपनी शक्ति एवं पराक्रम का इस्तेमाल असामाजिक कार्यों में करता है। कमज़ोर मंगल वाले व्यक्ति में साहस एवं पराक्रम का अभाव होता है। इसलिए मंगल की शुभता हेतु यदि इन मंत्रों का जाप किया जाए तो अवश्य लाभ प्राप्त होता है।

कैसे होते मंगल खराब :
घर का पश्चिम कोण यदि दूषित है तो मंगल भी खराब होगा।
हनुमानजी का मजाक उड़ाने या अपमान करने से।
धर्म का पालन नहीं करने से।

भाई या मित्र से दुश्मनी मोल लेने से।
निरंतर क्रोध करते रहने से।
मांस खाने से।
सूर्य और शनि मिलकर मंगल बद बन जाते हैं।
मंगल के साथ केतु हो तो अशुभ हो जाता है।
मंगल के साथ बुध के होने से भी अच्छा फल नहीं मिलता।

मंगल दोष के लक्षण :

मंगल हौसला और लड़ाई का प्रतीक है। यदि व्यक्ति डरपोक है तो मंगल खराब है।
भाई हो तो उनसे दुश्मनी होती है।
बच्चे पैदा करने में अड़चनें आती हैं। पैदा होते ही उनकी मौत हो जाती है।
व्यक्ति हर समय झगड़ता रहता है।
थाने या जेल में रातें गुजारना पड़ती हैं।

मंगल ग्रह ये बीमारी

मंगल हौसला और लड़ाई का प्रतीक है। यदि व्यक्ति डरपोक है तो मंगल खराब है।बहुत ज्यादा अशुभ हो तो बड़े भाई के नहीं होने की संभावना प्रबल मानी गई है।भाई हो तो उनसे दुश्मनी होती है।बच्चे पैदा करने में अड़चनें आती हैं।

मंगल ग्रह के बीमारी :

नेत्र रोग।
उच्च रक्तचाप। वात रोग।
गठिया रोग। फोड़े फुंसी होते हैं।
जख्मी या चोट।
बार बार बुखार आता रहता है।
शरीर में कंपन होता रहता है।
गुर्दे में पथरी हो जाती है।
आदमी की शारीरिक ताकत कम हो जाती है।
एक आंख से दिखना बंद हो सकता है।
शरीर के जोड़ काम नहीं करते हैं।
मंगल से रक्त संबंधी बीमारी होती है।
रक्त की कमी या अशुद्धि हो जाती है।
बच्चे पैदा करने में तकलीफ।
हो भी जाते हैं तो बच्चे जन्म होकर मर जाते हैं।

अचूक उपाय :

- रक्षात्मक मंगल कमजोर हो तो सफ़ेद मूंगा पहनें।
- ताम्बे के लास से पानी पिएं।
- लाल रंग का कलावा या रक्षासूत्र धारण करें।
- बड़ों के पैर दोनों हथेलियों से छुएं।
- सूर्य के सामने हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- हनुमान जी की उपासना करें और उन्हें चोला चढ़ाएं।